Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 03/March/2024 IJRAW: 2024; 3(4):10-14 Accepted: 01/April/2024

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार की विदेश नीतिः चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ

[*1]श्रीमती चंदा शर्मा और [2]प्रो. अमरजीत सिंह

[*1]शोध छात्रा, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, मध्य प्रदेश, भारत।

[2]प्रोफेसर, अधिष्ठाता, ग्रामीण विकास एवं व्यवसाय प्रबंधन संकाय, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

किसी दल को स्पष्ट बहुमत न मिलने की स्थिति में जब दो या दो से अधिक दलों का गठबंधन सरकार बनाता है, तो इसे गठबंधन सरकार कहा जाता है। भारतीय राजनीति का इतिहास इस बात का संकेत देता रहा है कि गठबंधन की सरकार की राष्ट्रनीति एवं पर–राष्ट्र नीति दोनों ही लचर होती है। इसका मुख्य कारण गठबंधन में शामिल राजनीतिक दलों के वैचारिक एवं दलगत हितों के मध्य तालमेल का अभाव माना जाता है। चाहे 1989 या 1996 की यूपीए का गठबंधन हो या भारतीय जनता पार्टी के सहयोग एवं सहमति पर आधारित न्यूनतम साझा अभियान से बनी 1998 और 1999 की राजग की सरकार या 2004 एवं 2009 की संप्रग की सरकार हो, विदेश नीति के हितों के साथ अनेक स्थलों पर समझौता करना पड़ा। इसके विपरीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार के नेता के रूप में प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी के निर्णयों ने अन्तर्रास्ट्रीय जगत में भारत की खोई हुई साख को पुनर्स्थापित करने में में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कृष्ण मोहन झा ने अपनी पुस्तक यशस्वी मोदी में लिखा है कि, ''यह कहना गलत नहीं होगा कि प्रधानमन्त्री की कुर्सी पर आसीन होने के दो माह के अंदर ही नरेन्द्र मोदी केवल पड़ोसी देशों ही नहीं वल्कि दुनियाँ के सम्पन्न राष्ट्रों की सरकारों को अपनी दबंगई की थोड़ी सी ही झलक दिखाकर इतना प्रभवित करने में सफल हो चुके हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत की आवाज को अनसुना करने के अपने चिर–परिचित स्वभाव में बदलाव लाने के लिए उन्हें विवश होना ही पड़ेगा। मोदी के प्रति अपनी एलर्जी त्यागने को विवश अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा ने उनके प्रधानमन्त्री पद पर आसीन होते ही उन्हें अपने देश आने का न्योता देकर अपने रूख में बदलाव का संदेश पहले ही दे दिया था।'' आज रा.ज.ग. के गठबंधन की सरकार, अपने संकल्प शक्ति से विश्व के सशक्त राष्ट्रों की कतार में खड़ा है। अपने दसवें वर्ष में प्रवेश कर चुकी यह सरकार आन्तरिक सुशासन एवं विकास पथ पर तो अपना परचम लहरा रही है, साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच पर भी एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में भारत को देखने का नजरिया पूर्ण रूप से परिवर्तित हो चुका है।

मुख्य शब्दः विदेश नीति, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, वसुधैव कुटुम्बकम्।

प्रस्तावना

अधिकंशतः किसी भी देश की विदेश नीति के निर्धारण में उस देश का भूगोल, प्राकृतिक संसाधन, संस्कृति, जनसंख्या, विचारधारा, तकनीकी, कूटनीति, सैन्य बल आदि तत्वों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्बन्धों को स्थापित करता है और राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति करता है। भारत में स्वतन्त्रता प्राप्ति से वर्तमान समय तक कांग्रेस की ही सरकारें रहीं। इसी कारण भारत की विदेश नीति के क्षेत्र में कांग्रेस का ही प्रभुत्त्व रहा है। कुछ समय के लिए कांग्रेसी सरकारों की स्थापना भी भारत में हुयी, इसी कारण भारत की विदेश नीति में कुछ हद तक परिवर्तन भी हुये। सन् 1977 में आपातकाल की समाप्ति के परिणाम स्वरूप जनता पार्टी की सरकार के रूप में अनेक दलों के गठबन्धन की सरकार का उदय

***Corresponding Author:** श्रीमती चंदा शर्मा

हुआ। 1998, 1999 से 2004 तक राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबन्धन की सरकार सत्तारूढ़ रही। प्रधानमन्त्री अटल बिहारी बाजपेई के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति में महत्त्वपूर्ण कार्य करने का प्रयास किया गया, जैसे पाकिस्तान के सम्बन्धों में सुधार हेतु दिल्ली–लाहौर बस सेवा का आरम्भ, अमेरिका के साथ सम्बन्धों में सुधार, कारगिल युद्ध में सफलता, सफल परमाणु परीक्षण इत्यादि कुछ प्रमुख उदाहरण हैं। 10 वर्षों के अन्तराल के पश्चात् सन् 2014 में श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्त्व में भाजपा पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता में आई। प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्त्व में भारत की वर्तमान विदेश नीति की प्रमुख प्राथमिकतायें हैं–आर्थिक विकास एवं सशक्त भारत, बाह्य व आन्तरिक सुरक्षा, पड़ोसी देशों के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्धों को बढ़ावा देना, दक्षेस व एसियान जैसे क्षेत्रीय मंचों को सशक्त बनाने की दिशा में प्रयास करना, जी–20 जैसे वैश्विक मंचों के साथ संवाद व सहयोग बनाये रखना, लुक इस्ट के स्थान पर ऐक्ट इस्ट पॉलिसी अपनाना, प्रथम पड़ोसीवाद, तकनीकी भारतीय प्रवासी संरक्षण तथा ऊर्जा सुरक्षा इत्यादि। सरकार ने इस दौरान बांग्लादेश के साथ सीमा विवाद को सुलझाया, फ्रांस के साथ राफेल विमान समझौता किया। सार्क देशों के साथ सम्बन्धों में सुधार इत्यादि जैसे अनेक महत्त्वपूर्ण प्रयास किये। प्रधानमन्त्री मोदी ने एक सशक्त विदेश नीति का अनुसरण करते हुए चुनौतियों का समाधान करने हेतु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अथक प्रयास किया है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य है–रा.ज.ग. नेता प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्त्व में गठित सरकार द्वारा अंगीकृत भारत की विदेश नीति में हुए परिवर्तन का अध्ययन करना तथा इस नीति को अंगीकृत किए जाने के कारण राष्ट्रीय हित एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पड़ने वाले प्रभावों का आंकलन करना।

विदेश नीति

किसी देश की विदेश नीति जिसे अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की नीति भी कहा जाता है, अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने के लिए और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के वातावरण में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए राज्य द्वारा चुनी गई स्वहितकारी रणनीतियों का समूह होती है। जॉर्ज मोडेलस्की के अनुसार ''विदेश नीति राज्यों की गतिविधियों का वह व्यवस्थित और विकसित रूप है, जिनके माध्यम से कोई राज्य दूसरे राज्यों के व्यवहार को अपने अनुकूल बनाने या अपने व्यवहार को अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुरूप ढ़ालने का प्रयास करता है।'' [2] सन् 1950 में लोक सभा में भाषण देते हुए पण्डित नेहरू ने कहा था कि ''यह नहीं माना जाना चाहिए कि विदेश नीति में एकदम नई शुरूआत कर रहे हैं। यह एक कागजी नीति है, जो हमारे भूतकाल के इतिहास से तथा हमारे राष्ट्रीय आन्दोलनों के दौरान प्रस्तुत परिकल्पनाओं पर आधारित है।'' उन्हीं घोषणाओं में वर्णित भारतीय विदेश नीति में उपनिवेशवाद, जातिवाद, फांसीवाद आदि का विरोध सन्निहित है, जिसे स्वाधीनता के संघर्षकाल में ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के द्वारा स्पष्ट किया जा चुका था।

भारतीय विदेश नीति के निर्धारण में जिन प्रमुख तत्त्वों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है वे हैं–भारत विश्व का 3.28 मिलियन वर्ग किमी के साथ विश्व के सबसे बड़े राज्यों में से सातवाँ बड़ा राज्य होना, 7516 किमी लम्बाई का समुद्र तट होना, 140 करोड़ की जनसंख्या के साथ सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश होना, जी.डी.पी. 4112 बिलियन के विश्व का पाँचवा सर्वाधिक तीव्र गति से विकसित हो रही अर्थव्यवस्था होना, तीसरा सबसे बड़ा सैन्य–शक्ति वाला देश होना, प्रचुर प्राकृतिक सम्पदा एवं बहुआयामी औद्योगिक क्षेत्र होना, रक्षा उत्पादन में आत्म–निर्भरता के तरफ बढ़ना इत्यादि कुछ प्रमुख घटक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इसी प्रकार भारत की गौरवशाली ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं सांस्कृतिक विरासत, विश्व का सर्वाधिक विशाल जनतंत्र एवं इसके तात्कालिक राष्ट्रहित भी नीति निर्धारण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात देश के प्रथम प्रधानमन्त्री जवाहर लाल नेहरु ने जातिवाद व साम्राज्यवाद का विरोध, नियोजित विकास पर बल, एशियाई एवं अफ्रीकी देशों के गौरव व सम्मान की रक्षा, पड़ोसियों से मधुर सम्बन्ध, द्विधुवीय व्यवस्था सेपृथक रहकर गुट निरपेक्षता की नीति के साथ संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अन्य शान्तिपूर्ण तरीके से विवादों के समाधान का लक्ष्य रखा। इस प्रकार नेहरु जी ने जिन प्रमुख सिद्धान्तों पर चलते हुए राष्ट्रनीति का संचालन किया, उनमें से कुछ प्रमुख निम्नांकित हैं–

लाल बहादुर शास्त्री जी को अल्प कार्यकाल में ही पाकिस्तान के 1965 में आक्रमण का दंश झेलना पड़ा, जिसकी पूर्ति श्रीमती गांधी ने 1971 में पूर्वी पाकिस्तान को बांग्ला देश के रूप में निर्माण कर भारत के सशक्तिकरण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया। अन्य प्रधानमन्त्री अल्पकालिक थे एवं विशेष उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं किए।

विदेश नीति के मामले में राष्ट्रीय लोकतान्त्रिक गठबन्धन के प्रधानमन्त्री अटल बिहारी बाजपेई भी परम्परावादी थे। उनका मानना था कि अल्प समय में विदेश नीति को आमूल चूल रूप देना सम्भव नहीं है। यद्यपि अटल बिहारी बाजपेई जोखिम लेने से परहेज नहीं करते थे और व्यावहारिक सम्बन्धों के निर्वहन में बुद्धिमान थे। उनकी जोखिम लेने की क्षमता तब सामने आयी, जब प्रधानमन्त्री रहते हुये भारत में मई 1998 में परमाणु परीक्षणों का दूसरा सेट आयोजित किया गया। पहले परीक्षण के लगभग एक चौथाई सदी बाद संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व में वैश्विक शक्तियों ने भारत पर आर्थिक प्रतिबन्ध लगा दिये। बाजपेई ने शीतकाल में अमेरिका इजराइल और पूर्व एशिया में अपने फैसले लिये और भारतीय हितों के युद्धों के सिद्धांतों को बेहतर बनाया। इसमें उनकी दूरदर्शिता और सफल वैज्ञानिकता की झलक दिखती है। वर्ष 2003 में अटल बिहारी बाजपेई की चीन यात्रा के दौरान अनेक समझौतों पर हस्ताक्षर किया गया, जिसमें

व्यापार और स्टूडियो सम्बन्धी उद्यमों को बढ़ावा देने का निर्णय लिया गया।

पड़ोस पहले की नीति

रा.ज.ग. के नेता के रूप में नरेन्द्र मोदी ने 2014 के लोकसभा चुनाव जीतने के बाद शपथ ग्रहण समारोह में पाकिस्तानी प्रधानमन्त्री नवाज शरीफ सहित दक्षिण एशिया के सभी नेताओं को आमन्त्रित किया। प्रधानमन्त्री बनने के बाद मोदी अपने पहले विदेश दौरे में भारत के पडोसी मुल्क भूटान को चुना, तो दूसरी बार प्रधानमन्त्री बनने के बाद पहली विदेश यात्रा पर मालदीप गये। मोदी की विदेश नीति में पडोसियों को प्राथमिकता देने की जो शुरूआत की गई, वो वर्तमान में भी जारी है। दक्षिण एशिया के अपने पडोसियों के मध्य सम्बन्ध सुधारना मोदी की विदेश नीति के केन्द्र बिन्दु में है। उन्होंने 100 दिन के अन्दर ही भूटान, नेपाल, जापान, अमेरिका, म्यांमार, आस्ट्रेलिया और फिजी की यात्रा की। इन सब प्रयासों का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पड़ने वाले प्रभावों का यहाँ संक्षिप्त आंकलन किया जा रहा है।

महाशक्तियों के साथ सम्बन्ध

महाशक्तियों में विश्व के सर्वाधिक शक्ति सम्पन्न देश संयुक्त राज्य अमेरिका में मोदी की अनेक यात्राओं के परिणामस्वरूप बराक ओबामा से लेकर ट्रम्प एवं जो बाइडेन तक सभी राष्ट्रपतियों के साथ मधुर सम्बन्ध के कारण चीन एवं पाकिस्तान के पराभव के साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में बड़े बदलाव हुए हैं। क्वाड संगठन में भारत अमेरिका जापान एवं आस्ट्रेलिया ने दक्षिण एशिया एवं प्रशान्त क्षेत्र के शक्ति संतुलन को प्रभावित किया है। इसी प्रकार रूस सोवियत संघ के काल से ही भारत का विश्वस्त मित्र रहा है। वह अपने उन्नत तकनीक से युक्त रक्षा अस्त्र–शस्त्रों को प्रदान कर भारत का समर्थन करता है। दोनों के बीच रक्षा व्यापार 18 बिलियन डालर से अधिक का हो चुका है। दोनों ही देश एक दूसरे पर न केवल विश्वास करते हैं, बल्कि परस्पर सहयोग भी करते हैं। यही कारण है कि अमेरिका के दबाव के बावजूद भरत रूस से तेल आयात करता रहा।

पाकिस्तान एवं चीन सम्बन्ध

दोनों देशों के साथ सीमा विवाद को लेकर कटुता के कारण पाकिस्तान एवं चीन का भारत के साथ असहज सम्बन्ध निरन्तर बना रहता है। भारत ने काश्मीर से धारा 370 समाप्त करके पाकिस्तान को स्पष्ट संदेश दे दिया है कि काश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। इसी प्रकार पाकिस्तान के आतंकवादी कार्यों एवं घुसपैठ को रोकने के लिए सर्जिकल स्ट्राइक एवं एयर स्ट्राइक करके उसे संदेश दे दिया है। इसी प्रकार डोकलाम एवं तिब्बत में चीन के कुत्सित इरादों को रोककर देश की अखण्डता एवं सुरक्षा बनाये रखने का संदेश दे दिया है। 2016 में उरी आंतकी हमलों के बाद पाकिस्तान के विरूद्ध सर्जिकल स्ट्राइक, 2016 में पुलवामा हमले के बाद बालाकोट एयर स्ट्राइक, 2017 में डोकलाम में चीन के विरूद्ध कार्यवाही, लद्दाख में चीन के विरूद्ध कार्यवाही; भारतीय विदेश नीति के आक्रामक और कठोर होने के प्रमुख उदाहरण हैं। विगत 10 वर्षों में भारतीय शहरों पर कोई बड़ा आतंकवादी हमला नहीं हुआ।

इस प्रकार मोदी जी ने प्रधानमन्त्री बनने के पूर्व ही यह संकेत दे दिये थे कि उनकी नीतियों में पड़ोसी राष्ट्रों को प्रमुखता दी जायेगी। इसका प्रमाण उनके शपथ समारोह में स्पष्ट रूप से देखने को मिला। सभी देशों के राष्ट्राध्यक्ष इस समारोह में सम्मिलित हुए एवं प्रत्येक राष्ट्राध्यक्ष के साथ द्विपक्षीय वार्ता की गई, जिसे 'मिनी सार्क सम्मेलन' के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया द्वारा पहचान की गयी।

लुक इस्ट एण्ड ऐक्ट इस्ट पॉलिसी

भारत के पूर्व के देशों समग्र आसियान के देशों के मध्य आर्थिक एकीकरण की नीति भारत द्वारा वर्ष 1992 में अपनाई गई थी, परन्तु इसमें कई बाधायें देखने को मिली। मोदी सरकार ने बेहतर विकास पर बल दिया तथा दक्षिण कोरिया और जापान जैसे पूर्व में स्थित देशों के साथ सम्बन्ध को बेहतर करने की रणनीति अपनाई। उन्होंने 'लुक इस्ट पॉलिसी' की जगह 'ऐक्ट इस्ट पॉलिसी' पर बल दिया। भारत के 69वें गणतन्त्र दिवस 26 जनवरी 2018 के अवसर पर परेड समारोह में आसियान के 10 देशों के राष्ट्र प्रमुखों और शासनाध्यक्षों ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। आसियान देशों के साथ भारत के गहरे होते सम्बन्धों और भारत के महत्त्व और प्रभाव को दर्शाता है।

सांस्कृतिक कूटनीति

सांस्कृतिक कूटनीति में प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने जापान की यात्रा के लिये क्योटो शहर का चुनाव और वाराणसी तथा क्योटो के बीच बौद्ध धर्म के सांस्कृतिक सम्बन्धों पर बल दिया। म्यांमार यात्रा के दौरान भी सांस्कृतिक सम्बन्धों द्वारा आर्थिक एवं व्यापारिक सम्बन्धों को मजबूत किया गया। भारत द्वारा प्रस्तावित 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के प्रस्ताव को स्वीकार करके पूरे विश्व में योग दिवस का आयोजन किया गया; जो भारत के सॉफ्ट पावर को बढ़ाने में सहायक है। 11 दिसम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा के 69वें सत्र के दौरान प्रस्ताव पारित करके 21 जून को 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' मनाये जाने के लिये मान्यता दी गई।

अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा

वर्तमान में मोदी सरकार के लिए आक्रमक नीति की विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना एवं परिवर्तित अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य पर नजर रखना है, जिसमें कि अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ कदम से कदम मिलाकर चल सके। आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक अभियान को समर्थन करना, सीमापार आतंकवाद को समाप्त करना एवं पाकिस्तान में कार्यरत आतंकवादी ढ़ांचे

को समाप्त करना, जैसे कठोर कदम भारत द्वारा उठाये गये है।

संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत विश्व शान्ति बनाये रखने के लिए निःशस्त्रीकरण एवं युद्ध रोकने के कार्यों में सहयोग करता रहा है। यूक्रेन–रूस युद्ध के दौरान जो अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन एवं ब्रिटिश प्रधानमन्त्री के निवेदन पर मोदी ने रूस के राष्ट्रपति पुतिन से परमाणु बम का प्रयोग नहीं करने की अपील मान लिया। यह एक बड़ी कूटनीतिक विजय एवं भारत के बढ़ते कद का द्योतक है।

कोविड–19 में वसुधैव कुटुम्बकम् की नीति अपना कर वैक्सीन डिप्लोमेसी एवं जी–20

वैश्विक महामारी के संकट के समय दूसरे देशों को मानवीय सहायता प्रदान करने के लिये जनवरी 2021 में भारत ने वैक्सीन मैत्री पहल शुरू की। वर्तमान तक 98 देशों को लगभग 18 करोड़ खुराक की आपूर्ति की गई है। भारत ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की परम्परा का पालन करके कोरोना काल में मानव जीवन बचाने की मिशाल पेश की है; जिसकी सराहना 'क्वाड' एवं 'जी–20' की बैठकों में आये सम्पूर्ण विश्व के नेताओं द्वारा की जा रही है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किये गये सशक्त ऑपरेशन

फरवरी 2022 में रूस द्वारा यूक्रेन पर सैन्य आक्रमण में फंसे भारतीय नागरिकों व छात्रों को स्वदेश लाने के लिये मोदी के नेतृत्व में 'ऑपरेशन गंगा' अभियान प्रारम्भ किया गया। भारतीय प्रधानमन्त्री मोदी के नेतृत्त्व में प्रभावी व निरन्तर मॉनिटरिंग में यूक्रेन के युद्ध प्रभावित क्षेत्रों से लगभग 22500 भारतीय नागरिक व छात्रों को सुरक्षित देश वापस लाया गया।

भारत ने पिछले 10 वर्षों के दौरान 'ऑपरेशन गंगा' (2022) और 'ऑपरेशन देवी शक्ति' (2021) जैसे विभिन्न राहत प्रदान करने वाले कार्यक्रम और भारतीय नागरिकों को सम्बन्धित देशों से युद्ध के दौरान सुरक्षित रूप से निकासी अभियान चलाया। हम कह सकते हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उभरते सशक्त भारत की ताकत के द्वारा समस्त विश्व को प्रभावित करने की सूचक है। 9 एवं 10 सितम्बर 2023 को नई दिल्ली में भारत को मिली जी–20 की अध्यक्षता का गौरव प्राप्त हुआ और युद्ध–ग्रस्त सूडान से 3000 से अधिक भारतीयों को वापस लाया गया। इसी प्रकार यूक्रेन से 23 हजार भारतीयों की सुरक्षित वतन वापसी हुई और तुर्की में आये भयंकर भूकम्प के अवसर पर 'आपरेशन दोस्त' के तहत 5945 टन आपातकालीन राहत खेप सीरिया और तुर्की में भेजी गई।

सुरक्षित भारत शक्तिशाली भारत

लम्बे समय से रक्षा क्षेत्र के बजट में हो रही कटौती को दरकिनार कर नरेन्द्र मोदी ने रक्षा उत्पादों के निर्माण क्षेत्र में अपने 'मेक इन इंडिया' योजना के तहत आत्म–निर्भरता लाई, बल्कि भारत में निर्मित रक्षा उत्पाद के निर्यात में पिछले 5 वर्षों में 334 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी दर्ज की। डिफेन्स स्टार्ट–अप के लिए करीब प्रति वर्ष रक्षा बजट में निरन्तर वृद्धि की जा रही है। सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक से सीमा पार आतंकवाद को मुँहतोड़ जवाब दिया। भारत मण्डपम में जी–20 देशों–आस्ट्रेलिया, फ्रांस, ब्राजील, कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, अर्जेण्टीना, ब्रिटेन, चीन, तुर्की, भारत, सोवित संघ, इटली, जापान, मैक्सिको, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण कोरिया और यूरोपीय संघ एवं अफ्रीकी संघ इत्यादि जैसे शक्तिशाली देशों की अध्यक्षता करने का गौरवपूर्ण इतिहास निर्मित हुआ।

निष्कर्ष

दक्षिण एशियायी देशों के राष्ट्राध्यक्षों और मारिशस के नेताओं को अपने शपथ समारोह में बुलाया, चीन के सामने डट कर खड़े हुए, सबसे लोकप्रिय ग्लोबल नेता के रूप में उभरे, जापान के साथ नजदीकियाँ बढ़ीं, इजराइल के प्रधानमन्त्री मोदी के मुरीद, अप्रैल 2023 तक 67 विदेश यात्राएँ कर चुके हैं, दशकों तक एक–दूसरे को अविश्वास की निगाह से देखने के बाद अब भारत और अमेरिका सबसे नजदीकी रणनीतिकार एवं भारत का सबसे बड़ा वित्तीय साझेदार बन गया है। ट्रंप ने 'नमस्ते ट्रंप' इवेन्ट में मोदी के महत्त्व को व्यक्त किया ''प्रधानमन्त्री मोदी का जीवन इस महान देश की अनन्त सम्भावनाओं को रेखांकित करता है, सब इन्हें प्यार करते हैं, लेकिन वे बहुत सख्त हैं।'' आज दुनिया के दबाव में भी भारत की विदेश नीति स्वतन्त्र रही, साथ ही रूस और अमेरिका दोनों के साथ मधुर सम्बन्ध बने हुए हैं। अमेरिका का रूस से तेल न लेने के दबाव को अस्वीकार कर, चीन द्वारा डोकलाम में बन रही सड़क का कार्य रोक कर, भारतीय मूल के लोगों का जुड़ाव वित्तीय निवेश में करवाकर, अप्रवासी भारतीयों को भारत के विकास प्रक्रिया में सहभागी बना कर देश के चहुँमुखी विकास को दिशा दी। वैक्सीन डिप्लोमैसी के तहत कोविड जब चरम पर था तो भारत टीके निर्यात करने वाले पहले देशों में शामिल रहा। दुनिया भर में संकट में फंसे भारतीयों की मदद हुई–यूक्रेन, यमन, सूडन में फंसे भारतीयों की निकालने के साथ ही कतर द्वारा दण्डित भारतीयों को मुक्त कराया। सुरक्षा के क्षेत्र में आत्म–निर्भर भारत चाँद पर पहुँच एवं सूर्य के अध्ययन हेतु सेटेलाइट स्थापित किया। मध्य–पूर्व की यात्राएँ की जहाँ अनेक मुस्लिम राष्ट्रों जैसे, यू.ए.ई. (2019), बहरीन (2019), सउदी अरब (2016), अफगानिस्तान (2016), फिलीस्तीन (2018), मालदीप (2019) एवं मिश्र इत्यदि ने अपने सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित किया। इसी प्रकार रूस, अमेरिका, भूटन फिजी, रिपब्लिक ऑफ पलाऊ, दक्षिण कोरिया के साथ ही संयुक्त राष्ट्र संघ के सर्वोच्च सम्मानों से नवाजा जा चुका है।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि विश्व के सबसे बड़े व सुदृढ़ लोकतन्त्र भारत की विदेश नीति का स्वतन्त्रता से वर्तमान तक निरन्तर विकास हुआ है। भारत के राष्ट्रीय

हितों के अनुरूप वैश्विक परिप्रेक्ष्य में विदेश नीति का स्वरूप आंशिक रूप से बदलता रहा है, किन्तु भारतीय विदेश नीति के मूलभूत सिद्धान्त प्रायः स्थिर रहे हैं। प्रधानमन्त्री जवाहर लाल नेहरू से लेकर वर्तमान प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी तक भारत की विदेश नीति में स्थिर तत्त्वों के साथ ही साथ अनेक परिवर्तन देखने को मिलते है। वर्तमान भारत की विदेश नीति राष्ट्रीय सम्प्रभुता की रक्षा करते हुये बेझिझक निर्णय लेती है तथा विश्व पटल पर भारत एक आर्थिक और सैन्य दृष्टि से भी उभरती हुई महाशक्ति के रूप में दिखाई पड़ता है। वैश्विक सन्दर्भ में भी निर्णय हो तो उसमें भारत का महत्त्वपूर्ण स्थान रहता है। भारत, विदेश नीति के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण कठोर निर्णय लेने में कोई संकोच नहीं करता है। परमाणु परीक्षण करना हो या आंतकवाद के खिलाफ सीमा–पार जाकर सैन्य कार्यवाही करना हो या फिर जम्मू कश्मीर से अनुच्छेद 370 की समाप्ति करना जैसे निर्णय यह सिद्ध करते हैं कि 21वीं शताब्दी में भारत की विदेश नीति पहले से कही अधिक मजबूत, स्पष्ट, सुदृढ़ और सशक्त होने के साथ ही राष्ट्रीय हितों की आवश्यकता के अनुरुप तथा परिवर्तन की ओर दिखाई पड़ती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. झा, कृष्ण मोहन (1915). 'यशस्वी मोदी' प्रथम संस्करण, सुदीप पब्लिकेशन, पृ.सं.–72, अल्कापुरी, भोपाल.
2. दैनिक भास्कर, 20 अप्रैल 2022 संपादकीय पृष्ठ–4.
3. अख्तर, मजीद, कोलिशन पोलिटिक्स एण्ड पॉवर सेयरिंग, मानक प्रा.लि., नई दिल्ली, 2000.
4. आहूजा, मोलो, हैण्डबुक ऑफ जनरल इलेक्शन एण्ड इलेक्टर रिफॉर्म, मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2000.
5. आहूजा, गुरूदास, भारतीय राजनीति और भाजपा का आगमन, राम कम्पनी, नई दिल्ली, 1989.
6. आडवाणी, लालकृष्ण, द प्यूपिल वेट्रायड, विजन बुक्स, नई दिल्ली, 1978.
7. अग्रवाल, रामचन्द्र, भारतीय संविधान का विकास तथा राष्ट्रीय आन्दोलन, नई दिल्ली, 1977.
8. खन्ना, वी.एन. (2014).'अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध', विकास पब्लिकेशन हाऊस, नोएडा.
9. झा, कृष्ण मोहन (1915). 'शशस्वी मोदी' प्रथम संस्करण, सुदीप पलिकेशन, पृ.सं. 72, अल्कापुरी, भोपाल.
10. देशमुख, नानाजी, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, 1979.
11. भावना भट्ट (वर्ष 2014). 'भारतीय विदेश नीति एवं प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी के प्रथम कार्यकाल का विश्लेषणात्मक अध्ययन'.
12. दैनिक भास्कर, 20 अप्रैल 2022 संपादकीय पृष्ठ–4.
13. नरेन्द्र मोदी सरकार की विदेश नीति ्.him.vikipidia.org.
14. रामचन्द्र डूडी. भारत की गतिशील विदेश नीति 'मोदी शासन काल के संदर्भ में': एक अध्ययन.
15. भारतीय विदेश नीति https/www.dristias.com.hindi